Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 05/September/2024 IJRAW: 2024; 3(10):34-39 Accepted: 09/October/2024

छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*[1]डॉ. विनीता गौतम

*[1]सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, लक्ष्मण प्रसाद वैध शासकीय कन्या महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

मध्य भारत का ह्रदय, छत्तीसगढ राज्य अपने अनुपम प्राकृतिक सौदर्यता के कारण, पर्यटन उद्योग में एक महत्वपूर्ण राज्य के रूप में उभरा है, जिसकी विशेषता इसकी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत, विपुल आदिवासी संस्कृति और आश्चर्यजनक प्राकृतिक परिदृश्य ने लोगों को आकर्षित किया है। लगभग 44: से अधिक क्षेत्र वनों से आच्छादित होने के कारण, यह राज्य भारत के सबसे हरे–भरे राज्यों में से एक है, जो इको–पर्यटन के ढेरों अवसर प्रदान करता है। प्रमुख आकर्षणों में लुभावने चित्रकोट जलप्रपात, तीरथगढ जलप्रपात, जैव विविधता से भरपूर कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान और सिरपुर का प्राचीन पुरातात्विक स्थल शामिल हैं, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन क्षेत्र स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है, जो रोजगार पैदा करता है और आजीविका का समर्थन करता है, खासकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में। ''हस्तशिल्प न केवल स्थानीय कारीगरों के कलात्मक कौशल को दर्शाते हैं, बल्कि पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण का केंद्र भी हैं।'' (मेहता, 2016, पृष्ठ 115)। हालांकि, इन उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, सीमित विपणन प्रयास और कुछ क्षेत्रों में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ शामिल हैं। कुछ क्षेत्रों में नक्सली गतिविधि की उपस्थिति ने संभावित पर्यटकों के लिए सुरक्षा की धारणा को भी प्रभावित किया है। छत्तीसगढ़ राज्य अपनी पर्यटन क्षमता का उचित उपयोग करने के लिए, स्थानीय स्तर पर स्थायी पर्यटन प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जो समुदाय–आधारित पहलों को बढ़ावा दे रहा है, जिससे स्थानीय आबादी को सशक्त बनाया जा सकें और उनके सांस्कृतिक विरासत को स्वयं उनके द्वारा संरक्षित किया जा सकें। राज्य सरकार घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए नवाचार के माध्यम से प्रचार रणनीतियों को बढ़ाते हुए परिवहन, आवास और पर्यटक सुविधाओं को बेहतर बनाने में निवेश कर रही है। संक्षेप में, छत्तीसगढ़ का पर्यटन उद्योग अपनी अनूठी पेशकशों और सांस्कृतिक समृद्धि से प्रेरित होकर महत्वपूर्ण संभावनाओं से भरा हुआ है। जो न केवल छत्तीसगढ़ राज्य बल्कि भारत को अर्थिक रूप से सशक्त बना सकता हैं। इसके लिए मौजूदा चुनौतियों का समाधान करके और संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देकर, राज्य खुद को भारत में एक प्रमुख इको–पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित कर सकता है, जो राष्ट्रीय पर्यटन परिदृश्य के समग्र विकास में योगदान देगा।

मुख्य शब्दः पर्यटन उद्योग, सांस्कृतिक विरासत, इको–पर्यटन, पुरातात्विक स्थल, संधारणीय प्रथाओं।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग लगातार विकसित हो रहा है, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और इको–टूरिज्म क्षमता का लाभ उठा रहा है। राज्य अपनी विविध आदिवासी संस्कृति, ऐतिहासिक स्थलों और हरे–भरे जंगलों के लिए जाना जाता है, जो इसे घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाता है। ''छत्तीसगढ़ में विरासत स्थल क्षेत्र के इतिहास को समझने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।'' (शर्मा, 2022, पृष्ठ 205)[6]। छत्तीसगढ़ की पर्यटन पहल इको – टूरिज्म को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जिसमें कई पहचाने गए क्षेत्र हैं जो प्रकृति – आधारित गतिविधियों के अवसर प्रदान करते हैं। सरकार ने रायपुर – तुरतिरिया – सिरपुर,

*Corresponding Author: डॉ. विनीता गौतम

बिलासपुर–अचानकमार और जगदलपुर–कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान जैसे प्रमुख पर्यटन ट्रैक को कवर करते हुए इको–टूरिज्म परियोजनाएं शुरू की हैं। इन पहलों का उद्देश्य वन्यजीव क्षेत्रों की रक्षा करना, कैंपिंग ग्राउंड विकसित करना और ट्रेकिंग सुविधाओं को बढ़ाना है, जिससे छत्तीसगढ़ भारत में एक प्रमुख इको–टूरिज्म गंतव्य के रूप में स्थापित हो सके। इसके अतिरिक्त, राज्य में राष्ट्रीय उद्यान, झरने और सांस्कृतिक स्थलों सहित कई तरह के आकर्षण हैं जो इसके समृद्ध इतिहास और परंपराओं को दर्शाते हैं। पर्यटन बोर्ड इन सुविधाओं को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है, आगंतुकों की सहभागिता बढ़ाने के लिए गंतव्यों, आवासों और स्थानीय अनुभवों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है। राज्य में राष्ट्रीय उद्यानों, झरनों और सांस्कृतिक स्थलों सहित कई तरह के आकर्षण हैं जो इसके समृद्ध इतिहास और परंपराओं को दर्शाते हैं। पर्यटन बोर्ड इन सुविधाओं को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है, आगंतुकों की सहभागिता बढ़ाने के लिए गंतव्यों, आवासों और स्थानीय अनुभवों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है। कुल मिलाकर, छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग न केवल आर्थिक विकास का एक साधन है, बल्कि राज्य की अनूठी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रदर्शित करने का एक तरीका भी है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग ने अपनी अनूठी पेशकशों और रणनीतिक पहलों के कारण उल्लेखनीय वृद्धि और विकास देखा है। जिसका विश्लेषण निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से किया गया है–

1. पर्यटन सांख्यिकी

हाल के वर्षों में, छत्तीसगढ़ में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। उदाहरण के लिए, राज्य ने 2019 में लगभग 1.5 मिलियन घरेलू पर्यटकों और लगभग 100,000 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को दर्ज किया, जो एक यात्रा गंतव्य के रूप में इसकी बढ़ती अपील को दर्शाता है। साथ ही राजस्व सृजन में पर्यटन क्षेत्र का राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है, आतिथ्य, परिवहन और स्थानीय हस्तशिल्प जैसे विभिन्न चैनलों के माध्यम से राजस्व उत्पन्न करता है। सरकार ने बताया है कि पर्यटन राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 5: का योगदान देता है।

2. प्रमुख आकर्षण

प्राकृतिक आकर्षणः छत्तीसगढ़ कई राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों का घर है, जिनमें शामिल हैं:
कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, अपनी जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, यह प्रकृति प्रेमियों और रोमांच चाहने वालों को आकर्षित करता है। साथ ही छत्तीसगढ़ में विभिन्न जलप्रपात जैसे चित्रकोट, तीरथगढ़, कांगेर धरा इत्यादि जलप्रपात पर्यटको के लिए आर्कषण का केन्द्र है, खासकर मानसून के मौसम में।
सांस्कृतिक विरासतः राज्य में कई ऐतिहासिक स्थल हैं, जिनमें प्राचीन मंदिर और आदिवासी गाँव शामिल हैं, जो इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी देते हैं। सिरपुर पुरातात्विक स्थल अपने प्राचीन बौद्ध खंडहरों के लिए उल्लेखनीय है।

3. इको–टूरिज्म पहल

स्थायी अभ्यासः छत्तीसगढ़ सरकार ने इको–टूरिज्म परियोजनाएँ शुरू की हैं जो टिकाऊ अभ्यासों पर जोर देती हैं। इसमें हर्बल गार्डन और प्राकृतिक स्वास्थ्य रिसॉर्ट्स का विकास, स्थानीय जनजातियों द्वारा प्रचलित नृवंश–चिकित्सा के उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है।
समुदाय की भागीदारीः स्थानीय समुदाय इको–टूरिज्म पहलों में सक्रिय रूप से शामिल हैं, जो न केवल पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद करता है बल्कि उन्हें आय का एक स्रोत भी प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण ने पर्यटकों के अनुभव को बढ़ाने के लिए होमस्टे और स्थानीय गाइड की स्थापना की है। ''पर्यटन में रोजगार प्रदान करके और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देकर स्थानीय समुदायों के उत्थान की क्षमता है।'' (जोशी, 2021, पृष्ठ 150)[2]।

4. आदिवासी पर्यटन

विविध आदिवासी संस्कृतिः छत्तीसगढ़ में आदिवासी आबादी काफी है, बस्तर जिले में गोंड सहित जनजातियों की सबसे बड़ी संख्या है। प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग संस्कृति, परंपराएँ और त्यौहार हैं, जो सांस्कृतिक अनुभवों में रुचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
सांस्कृतिक उत्सवः बस्तर दशहरा और स्थानीय आदिवासी मेले जैसे कार्यक्रम पर्यटकों को जीवंत आदिवासी संस्कृति से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प का प्रदर्शन किया जाता है।

5. सरकारी पहल

प्रचार और विपणनः छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड विभिन्न विपणन अभियानों के माध्यम से राज्य का सक्रिय रूप से प्रचार करता है, इसकी पारिस्थितिकी पर्यटन क्षमता और सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करता है। बोर्ड ने पर्यटकों के लिए व्यापक यात्रा कार्यक्रम भी विकसित किए हैं, जिससे राज्य की खोज करना आसान हो गया है।
बुनियादी ढाँचा विकासः सरकार पर्यटकों के लिए पहुँच बढ़ाने के लिए सड़क, आवास और परिवहन सुविधाओं सहित बुनियादी ढाँचे में सुधार करने में निवेश कर रही है।
इस प्रकार, छत्तीसगढ़ का पर्यटन उद्योग अपनी समृद्ध जैव विविधता, सांस्कृतिक विरासत और रणनीतिक सरकारी पहलों द्वारा समर्थित एक आशाजनक प्रक्षेपवक्र पर है। बुनियादी ढांचे और टिकाऊ प्रथाओं में निरंतर निवेश के साथ, राज्य भारत में एक अग्रणी इको–पर्यटन स्थल बनने के लिए तैयार है, जो अद्वितीय अनुभव चाहने वाले विविध प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करता है।

प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि का संयोजन छत्तीसगढ़ को भारतीय पर्यटन परिदृश्य में एक छिपे हुए रत्न के रूप में स्थापित करता है।

छत्तीयगढ़ पर्यटन उद्योग का भारत में योगदान

छत्तीसगढ़ भारतीय पर्यटन उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अपनी अनूठी पेशकशों, सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक संसाधनों के माध्यम से योगदान देता है। यहाँ इस बात का विश्लेषण दिया गया है कि छत्तीसगढ़ व्यापक भारतीय पर्यटन परिदृश्य में किस तरह योगदान देता है:

1. **आर्थिक योगदान:** छत्तीसगढ़ का पर्यटन क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 5: योगदान देता है, जो राज्य के समग्र आर्थिक संदर्भ को देखते हुए एक उल्लेखनीय आँकड़ा है। पर्यटन से उत्पन्न राजस्व स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में सहायता करता है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर प्रदान करता है। यह अनुमान है कि यह क्षेत्र आतिथ्य, परिवहन और स्थानीय शिल्प में हजारों नौकरियों का समर्थन करता है, जिससे कई परिवारों की आजीविका में योगदान मिलता है।
2. **विविध पर्यटक आकर्षण:** छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए जाना जाता है, जिसका 44: से अधिक क्षेत्र वनों से आच्छादित है। यह इसे भारत के सबसे हरे–भरे राज्यों में से एक बनाता है, जो पर्यावरण–पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करता है। ''वन्यजीव संरक्षण और पर्यटन के बीच तालमेल से छत्तीसगढ़ में जैव विविधता की सुरक्षा बढ़ सकती है।'' (चौधरी, 2019, पृष्ठ 110) [1]। मुख्य आकर्षणों में शामिल हैं:
    1. **कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान:** एक जैव विविधता हॉटस्पॉट जो वन्यजीव उत्साही लोगों को आकर्षित करता है।
    2. **चित्रकोट जलप्रपात:** एक प्रमुख पर्यटन स्थल, जिसे अक्सर ''भारत का नियाग्रा'' कहा जाता है।
    3. **सांस्कृतिक विरासत:** राज्य कई ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों का घर है, जैसे:
    4. **सिरपुर:** बौद्ध खंडहरों वाला एक प्राचीन स्थल जो इतिहासकारों और सांस्कृतिक पर्यटकों को आकर्षित करता है।
    5. **मंदिर और स्मारक:** प्राचीन मंदिरों सहित समृद्ध स्थापत्य विरासत, राज्य के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है।

3. जनजातीय पर्यटन

छत्तीसगढ़ में बड़ी संख्या में जनजातीय लोग रहते हैं, जिनकी संस्कृति, भाषा और परंपराएँ अलग–अलग हैं। यह विविधता जनजातीय जीवन शैली, शिल्प और त्यौहारों में रुचि रखने वाले पर्यटकों को अनूठा अनुभव प्रदान करती है। बस्तर क्षेत्र, विशेष रूप से, अपनी जीवंत जनजातीय संस्कृति और त्यौहारों के लिए जाना जाता है, जो देश भर से और विदेशों से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जनजातीय पर्यटन को बढ़ावा देने वाली पहल न केवल पर्यटकों के अनुभव को बढ़ाती है, बल्कि स्थानीय समुदायों को उनकी संस्कृति और शिल्प को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करके उन्हें सशक्त भी बनाती है।

4. पारिस्थितिकी–पर्यटन पहल

राज्य ने पारिस्थितिकी–पर्यटन परियोजनाएँ शुरू की हैं जो पर्यटन को बढ़ावा देते हुए सतत विकास, प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इसमें पर्यावरण के अनुकूल आवासों की स्थापना और स्थानीय वनस्पतियों और जीवों को बढ़ावा देना शामिल है।

हर्बल गार्डन और प्राकृतिक स्वास्थ्य रिसॉर्ट: ये पहल राज्य की समृद्ध जैव विविधता और हर्बल चिकित्सा के पारंपरिक ज्ञान को उजागर करती हैं, जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूक पर्यटकों और वेलनेस पर्यटन में रुचि रखने वालों को आकर्षित करती हैं।

5. सरकारी सहायता और बुनियादी ढांचे का विकास

छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड विभिन्न मार्केटिंग अभियानों और यात्रा मेलों में भागीदारी के माध्यम से राज्य को पर्यटन स्थल के रूप में सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है। इससे घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के पर्यटकों को आकर्षित करने में मदद मिलती है।बुनियादी ढांचे में सुधार: सरकार समग्र पर्यटक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए परिवहन, आवास और अन्य सुविधाओं में सुधार करने में निवेश कर रही है। इसमें दूरदराज के क्षेत्रों में बेहतर सड़क संपर्क और पर्यटक–अनुकूल सुविधाओं का विकास शामिल है।

भारतीय पर्यटन उद्योग में छत्तीसगढ़ का योगदान बहुआयामी है, जिसमें आर्थिक लाभ, सांस्कृतिक समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता शामिल है। अपनी अनूठी विशेषताओं का लाभ उठाकर और टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देकर, छत्तीसगढ़ न केवल अपनी आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाता है, बल्कि भारत के समग्र पर्यटन परिदृश्य को भी समृद्ध करता है। अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के लिए राज्य की प्रतिबद्धता इसे भारतीय पर्यटन क्षेत्र में एक मूल्यवान खिलाड़ी के रूप में स्थापित करती है, जो प्रामाणिक अनुभव चाहने वाले विविध प्रकार के आगंतुकों को आकर्षित करती है।

छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग के समक्ष चुनौतियां

छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग में काफी संभावनाएं हैं, लेकिन इसके विकास में बाधा डालने वाली कई चुनौतियां हैं। ''छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के लिए सतत पर्यटन प्रथाओं को लागू करना आवश्यक है।'' (पटेल, 2018, पृष्ठ 680) [4]। यहां कुछ मुख्य समस्याएं दी गई हैं:

1. **बुनियादी ढांचे की कमीः** छत्तीसगढ़ में कई पर्यटन स्थल सीमित पहुंच वाले दूरदराज के इलाकों में स्थित हैं। खराब सड़क की स्थिति और अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन विकल्प पर्यटकों को इन स्थलों पर जाने से रोक सकते हैं। साथ ही कई पर्यटन क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण होटल और ठहरने की सुविधाओं की कमी है। जबकि कुछ शहरी केंद्रों में अच्छे आवास हैं, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में अक्सर पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त विकल्प नहीं होते हैं।
2. **जागरूकता और प्रचारः** छत्तीसगढ़ अक्सर भारत के अधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थलों से पीछे रह जाता है। राज्य के अनूठे आकर्षणों और सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अधिक आक्रामक विपणन और प्रचार रणनीतियों की आवश्यकता है।
अविकसित पर्यटन अभियानः राज्य के पर्यटन अभियान इसकी विविध पेशकशों को प्रभावी ढंग से उजागर नहीं कर सकते हैं, जिससे संभावित आगंतुकों के बीच रुचि की कमी हो सकती है।
3. **सुरक्षा और संरक्षा संबंधी चिंताएँः** नक्सली गतिविधिः छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्र नक्सली विद्रोह से प्रभावित हैं, जो पर्यटकों के लिए सुरक्षा संबंधी चिंताएँ पैदा कर सकते हैं। इससे राज्य की यात्रा के बारे में नकारात्मक धारणाएँ पैदा हुई हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ ऐसी गतिविधियाँ होती हैं। सामान्य सुरक्षाः अपराध और सुरक्षा से जुड़े मुद्दे पर्यटकों, खासकर महिला यात्रियों को कुछ क्षेत्रों में जाने से रोक सकते हैं।
4. **पर्यावरण संबंधी चुनौतियाँः** पारिस्थितिक क्षरणः यदि पर्यटन का उचित प्रबंधन न किया जाए तो इससे पर्यावरण क्षरण हो सकता है। अनियमित पर्यटन गतिविधियों से कूड़ा–कचरा, वनों की कटाई और वन्यजीवों की गड़बड़ी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। स्थायी अभ्यासः राज्य की समृद्ध जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए स्थायी पर्यटन अभ्यासों पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है।
5. **सांस्कृतिक संवेदनशीलताः** आदिवासी अधिकार और भागीदारीः पर्यटन उद्योग को आदिवासी अधिकारों की जटिलताओं को समझना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्थानीय समुदाय पर्यटन विकास में शामिल हों। यदि पर्यटन से स्थानीय आबादी को लाभ नहीं होता है या उनकी संस्कृतियों को गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है तो तनाव हो सकता है। सांस्कृतिक शोषणः सांस्कृतिक वस्तुकरण का जोखिम है, जहाँ आदिवासी संस्कृतियों को वास्तविक सम्मान या समझ के बिना पर्यटकों के उपभोग के लिए प्रदर्शित किया जाता है।
6. **मौसमी उतार–चढ़ावः** मौसम पर निर्भरताः छत्तीसगढ़ में पर्यटन अत्यधिक मौसमी हो सकता है, जिसमें साल के कुछ खास समय (जैसे, झरनों के लिए मानसून) के दौरान सबसे ज्यादा पर्यटक आते हैं। इससे पर्यटन पर निर्भर लोगों की आय मं उतार–चढ़ाव हो सकता है।
7. **कुशल कार्यबल की कमीः** प्रशिक्षण और विकासः पर्यटन क्षेत्र में प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी है, जिसमें गाइड, आतिथ्य कर्मचारी और प्रबंधन कर्मी शामिल हैं। इससे पर्यटकों को दी जाने वाली सेवा की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार, स्थानीय समुदायों और पर्यटन उद्योग में हितधारकों के समन्वित प्रयास की आवश्यकता है। बुनियादी ढांचे में सुधार, विपणन रणनीतियों को बढ़ाने, सुरक्षा सुनिश्चित करने और संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने के माध्यम से, छत्तीसगढ़ अपनी पर्यटन क्षमता को अनलॉक कर सकता है और पर्यटकों और स्थानीय आबादी दोनों के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बना सकता है।

पिछले पांच वर्षो में छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग का विश्लेषण

हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन प्रयासों को दर्शाने वाली कुछ प्रमुख पहल निम्नलिखित है–

1. **बुनियादी ढाँचा विकासः** सड़क और कनेक्टिविटी में सुधार द्वारा सरकार ने प्रमुख पर्यटन स्थलों तक जाने वाली सड़कों को बेहतर बनाने और पहुँच बढ़ाने में निवेश किया है। उदाहरण के लिए, चित्रकोट जलप्रपात और कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान जैसे आकर्षणों तक आसान यात्रा की सुविधा के लिए रायपुर–बिलासपुर राजमार्ग में सुधार किया गया। आवास सुविधाएँ बढ़ाकर सरकार ने होटल और इको–रिसॉर्ट की स्थापना को प्रोत्साहित किया है। 2022 तक, राज्य में पंजीकृत होटलों की संख्या में लगभग 30ः की वृद्धि हुई है, जिससे पर्यटकों के लिए अधिक विकल्प उपलब्ध हुए हैं।
2. **इको–टूरिज्म को बढ़ावाः** इको – टूरिज्म परियोजनाएँ पर राज्य सरकार ने रायपुर – तुरतिरिया – सिरपुर, बिलासपुर–अचानकमार और जगदलपुर–कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान जैसे प्रमुख क्षेत्रों को कवर करते हुए इको–टूरिज्म परियोजनाएँ शुरू कीं। इन परियोजनाओं का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करते हुए स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देना है।
राजस्व सृजन में इको–टूरिज्म पहलों ने कथित तौर पर इन परियोजनाओं के आस–पास के क्षेत्रों में स्थानीय रोजगार में लगभग 20ः की वृद्धि की है, जिससे स्थानीय समुदायों को लाभ हुआ है।
3. **सांस्कृतिक और जनजातीय पर्यटन पहलः** जनजातीय पर्यटन संवर्धन के लिए सरकार ने आदिवासी पर्यटन को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है, विशेष रूप से बस्तर क्षेत्र में, जो एक बड़ी आदिवासी आबादी का घर है। पहलों में आदिवासी त्योहारों और मेलों का

आयोजन शामिल है, जिसमें सालाना 50,000 से अधिक आगंतुक भाग लेते हैं। तथा सांस्कृतिक विरासत स्थल, सिरपुर जैसे स्थलों के जीर्णोद्धार और संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है, सरकार ने पुरातात्विक अनुसंधान और साइट विकास के लिए धन आवंटित किया है, जिससे हाल के वर्षों में पर्यटकों की संख्या में 15: की वृद्धि हुई है।

4. **विपणन और संवर्धन:** डिजिटल मार्केटिंग अभियान: छत्तीसगढ़ पर्यटन बोर्ड ने राज्य को पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा देने के लिए विभिन्न डिजिटल मार्केटिंग अभियान शुरू किए हैं। आधिकारिक पर्यटन प्लेटफार्मों पर अनुयायियों में 40: की वृद्धि के साथ सोशल मीडिया जुड़ाव बढ़ा है। यात्रा मेलों में भागीदारी: राज्य ने अपनी पर्यटन क्षमता को प्रदर्शित करते हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय यात्रा मेलों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। उदाहरण के लिए, इंडिया इंटरनेशनल ट्रैवल मार्ट में भागीदारी ने ट्रैवल एजेंसियों और टूर ऑपरेटरों को आकर्षित करने में मदद की है, जिससे बुकिंग में वृद्धि हुई है।
5. **हेरिटेज और एडवेंचर टूरिज्म में निवेश:** एडवेंचर टूरिज्म विकास के लिए सरकार ने विशेष रूप से कांगेर घाटी जैसे क्षेत्रों में ट्रेकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग और रिवर राफ्टिंग जैसी एडवेंचर टूरिज्म गतिविधियों की पहचान की है और उन्हें विकसित किया है।''छत्तीसगढ़ के विविध परिदृश्य साहसिक पर्यटन के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं, जिसमें ट्रैकिंग और रिवर राफ्टिंग शामिल हैं।'' (सिंह, 2017, पृष्ठ 50) [5] । इससे पिछले पांच वर्षों में एडवेंचर टूरिज्म से संबंधित गतिविधियों में 25: की वृद्धि हुई है। तथा हेरिटेज वॉक और टूर, रायपुर और बिलासपुर जैसे शहरों में हेरिटेज वॉक आयोजित करने की पहल की गई है, जो स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों को आकर्षित करती है। इन टूर में सालाना 10,000 से अधिक व्यक्तियों की भागीदारी देखी गई है।

पिछले पांच वर्षों में छत्तीसगढ़ सरकार के कार्यों ने बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, इको और ट्राइबल टूरिज्म को बढ़ावा देने और मार्केटिंग प्रयासों को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। इन पहलों ने बढ़ते पर्यटन क्षेत्र में योगदान दिया है, जिससे आगंतुकों की संख्या और राजस्व सृजन में वृद्धि हुई है, जिससे अंततः स्थानीय अर्थव्यवस्था और समुदायों को लाभ हुआ है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन के भविष्य के विकास के लिए सतत प्रथाओं और बुनियादी ढांचे के विकास पर निरंतर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण होगा।

पर्यटकों का अध्ययन

छत्तीसगढ़ में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के पर्यटकों की एक विविध श्रेणी आती है। जो छत्तीसगढ़ में पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका से बड़ी संख्या में पर्यटक छत्तीसगढ़ आते हैं, खास तौर पर ऐसे लोग जिनकी रूचि सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी होती है, यूनाइटेड किंगडम ब्रिटिश पर्यटक अक्सर छत्तीसगढ़ के समृद्ध इतिहास, आदिवासी संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता के लिए आते हैं,

जर्मनी में पारिस्थितिकी पर्यटन में रुचि बढ़ रही है और कई जर्मन यात्री छत्तीसगढ़ की जैव विविधता और आदिवासी विरासत का अनुभव करने के लिए आते हैं, फ्रांस फ्रांसीसी पर्यटक भी छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक पहलुओं और प्राकृतिक परिदृश्यों की ओर आकर्षित होते हैं तथा जापान से जापानी पर्यटक अक्सर सांस्कृतिक आदान–प्रदान और अनूठी आदिवासी परंपराओं का पता लगाने के लिए आते हैं।

घरेलू स्तर पर, मध्य प्रदेश पड़ोसी राज्य होने के नाते, मध्य प्रदेश में बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, खास तौर पर इसके प्राकृतिक आकर्षण और सांस्कृतिक अनुभवों के लिए, महाराष्ट्र के पर्यटक अक्सर छत्तीसगढ़ आते हैं, जो इसके ऐतिहासिक स्थलों और पारिस्थितिकी पर्यटन के अवसरों से आकर्षित होते हैं, उत्तर प्रदेश से कई पर्यटक छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक समृद्धि और आदिवासी पर्यटन के लिए आते हैं, ओडिशा की निकटता के कारण इस राज्य से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, खासकर बस्तर और कांगेर घाटी जैसे क्षेत्रों में तथा पश्चिम बंगाल से पर्यटक छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक अनुभवों के लिए आकर्षित होते हैं, खासकर त्योहारों के दौरान।

इस प्रकार छत्तीसगढ़ का पर्यटन अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दोनों तरह के पर्यटकों से काफी प्रभावित है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और पड़ोसी भारतीय राज्यों जैसे मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र से उल्लेखनीय उपस्थिति है। सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और आदिवासी विविधता का राज्य का अनूठा मिश्रण पर्यटकों की एक विस्तृत श्रृंखला को आकर्षित करता है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध जनजातीय आबादी और आश्चर्यजनक प्राकृतिक परिदृश्यों के साथ एक अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में महत्वपूर्ण क्षमता रखता है। हालाँकि, इस क्षमता को पूरी तरह से साकार करने के लिए, राज्य को कई महत्वपूर्ण कारकों ध्यान देना होगा। बुनियादी ढाँचे का विकास आवश्यक है, क्योंकि पर्यटकों की बढ़ती संख्या को पूरा करने के लिए परिवहन, आवास और बुनियादी सुविधाओं में सुधार आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण की रक्षा और स्थानीय समुदायों का सम्मान करने के लिए स्थायी पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करना कि पर्यटन अर्थव्यवस्था और स्वदेशी आबादी दोनों को लाभ पहुँचाए। छत्तीसगढ़ के अनूठे आकर्षणों, जैसे कि आदिवासी पर्यटन और वन्यजीव अभयारण्यों को उजागर करने के लिए प्रभावी विपणन रणनीतियों की आवश्यकता है, जो अक्सर अधिक लोकप्रिय स्थलों से प्रभावित होते हैं। इसके अलावा,

पर्यटन बढ़ने के साथ सांस्कृतिक कमजोर पड़ने को रोकने के लिए आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। पर्यटन विकास में स्थानीय समुदायों को शामिल करने से पर्यटकों को प्रामाणिक अनुभव मिल सकते हैं और निवासियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। अंत में, एक मजबूत नियामक ढांचा स्थापित करने से पर्यटन गतिविधियों को प्रबंधित करने और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद मिलेगी। इन चुनौतियों का समाधान करके, छत्तीसगढ़ अपने पर्यटन क्षेत्र को बढ़ा सकता है, पर्यटकों की एक विविध श्रेणी को आकर्षित कर सकता है और अपनी अनूठी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए सतत विकास में योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. चौधरी, एस, ''छत्तीसगढ़ में वन्यजीव संरक्षण और पर्यटनः एक सहजीवी संबंध।'' *जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट,* 2019: 250:109–118।
2. जोशी, आर. ''छत्तीसगढ़ में स्थानीय समुदायों पर पर्यटन का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव।'' *जर्नल ऑफ कम्युनिटी डेवलपमेंट,* 2021: 56(2):145–160।
3. मेहता, एस. ''छत्तीसगढ़ के हस्तशिल्पः पर्यटन के माध्यम से परंपरा का संरक्षण।'' *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज,* 2016: 5(2):112–120।
4. पटेल, ए. ''छत्तीसगढ़ में सतत पर्यटन अभ्यासः पर्यावरण के अनुकूल पहलों का एक केस स्टडी।'' *जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म,* 2018: 26(4):678–695.
5. सिंह, आर. ''छत्तीसगढ़ में साहसिक पर्यटनः अवसर और चुनौतियाँ।'' *जर्नल ऑफ एडवेंचर टूरिज्म,* 2017: 8(1):45–58।
6. शर्मा, पी. ''छत्तीसगढ़ में विरासत पर्यटनः भविष्य के लिए अतीत को संरक्षित करना।'' *जर्नल ऑफ हेरिटेज टूरिज्म,* 2022: 17(3):201–215।